موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامي – جزء 2

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الأردو

المترجم :سيف الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त 2

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वय ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के पांच विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

6.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह अंधविश्वासों और निराधार बातों का खंडन करती और उनकी दोषपूर्णता स्पष्ट करती है,इन्ही अंधविश्वासों में से जादू भी है,जिस के द्वारा जादूगर अपनी मुराद की पूर्ति के लिए शैतानों की सहायता लेता है,और शैतान उस समय उसकी सहायता नहीं करता जब तक कि वह उसकी पूजा न करे।

जिन अंधविश्वासों से इस्लाम ने मना किया है,उन में पुराहिताई भी है,इसका तातपर्य गैब के ज्ञान का दावा करना और(पूछने वाले के)दिल की बात बताना है,यह दोनों–जादू एवं पुराहिताई–सख्त ह़राम है,बल्कि इनको अंजाम देना इस्लाम रोधक है,क्योंकि गैब का ज्ञान केवल अल्लाह को है,इस लिए कि वह अल्लाह की विशेषताओं में से है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(قلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ)

अर्थातःआप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा।

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अतः जिसने अपने लिए गैब के ज्ञान का दावा किया,उसने गैब के ज्ञान की विशेषता में अल्लाह के साथ साझेदारी का दावा किया और कुरान को झुटलाया।

7.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह पूर्ण है और जीवन के समस्त मामले उसमे हैं,चाहे श्रद्धा का मामला हो अथवा पूजा पाठ का,मामलात हों अथवा राजनीति,न्याय हो अथवा चरित्र।

- अतः आस्था के विष्य में आस्था के मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है,जो कि ये हैंःअल्लाह,उसके देवदूत,उसकी पुस्तकें,उसके रसूल,क़्यामत का दिन और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पर ईमान लाना।
  तथा पैगन्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के तकाज़ों को भी बयान करती है,उनमें सबसे महत्वपूर्ण तक़ाजा आपकी पुष्टि और अनुगमन करना है।
- पूजा पाठ के विषय में इस्लामी शिक्षाओं, **ह्रदय** और शरीर के अंगों की पूजाओं की विस्तार विवरण सम्मिलित है।
  ह्रदय की प्रार्थनाओं का तात्पयःधैर्य,भय,आशा,विश्वास,तौबा और प्रेम इत्यादि हैं।जबकि शरीर के अंगों की पूजाओं में:पवित्रता,नमाज़,ज़कात,रोज़ा,ह़ज,ज़िर्क,जेहाद और दावत शामिल हैं।
- मामलों के विषय में इस्लामी शिक्षाओं में समस्त महत्वपूर्ण विवरणों को सम्मिलित हैं,जैसेःखरीदना और बेचना,किराए पे कोई सामान देना,किसी को अपना वकील और प्रतिनिधि बनाना,कज की पुष्टि करना,निकाह व तलाक और खैती आदि के आदेश।
- राजनीति के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,राजा परजा के आपसी संबंधों के विवरणों को शामिल हैं,जैसे बैअ़त,आज्ञाकारी,परामर्श,दुआ,एकता और आपसी भाईचारा व सहानुभूति,इसी प्रकार युद्ध व शांति की स्थिति में गैर मुस्लिमों के साथ संबंध के विवरण भी मौजूद हैं,इस्लाम,शासक को न्याय पर स्थिर रहने,अल्लाह के कल्मा को बोलंद करने के लिए जिहाद करने,इस्लामी देशों की रक्षा करने और पांच मूलभूत आवश्यक्ताओं की रक्षा करने का आदेश देता है,इनका तात्पयःदीन,बुद्धि,प्राण व धन एवं सम्मान हैं।
- न्याय के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,दंड के आदेशों,हुदूद व क़िसास(बदला लेना)दियत व ताजीरात(दंड)को सम्मिलित हैं,ताकि अधिकारों की रक्षा हो सके,शांति बनी रहे और दंगाइयों को दंगे से रोका जा सके।

- शिष्टाचार एवं व्ययहार के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,परिवारिक,वैवाहिक,सामाजिक और पशिक्षण संबंधों के समस्त छोटे बड़े विवरणों पर प्रकाश डालती हैं,और सुंदर चरित्र से अलंकृत होने पर उतसाहित करती हैं,जिनमें माता पिता का आज्ञा,संबंध निभाना,जीभ की पवित्रता,नजर का रक्षा,गुप्तांगों की रक्षा,पर्दा करना और ह़या को अपनाना शीर्ष हैं,तथा इस्लामी शरीअ़त,तुछ व्यवहार और बुरे गुणों से मना करती है,भाईचारे और एकता पर प्रोत्साहित करती है,विरोध और गुटबंदी से रोकता है और लोगों को एक उम्मत बन कर रहने पर जोर देती है।

इसी समावेशिता के कारण इस्लाम धर्म मोकम्मल हुआ,अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमायाः (اليوم **أكملت** لكم دينكم **وأتممت** عليكم نعمتي **ورضيت** لكم الإسلام دينا)

अर्थातःआज मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है।तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया,और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया।

और रस्ल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(हर वह चीज़ जो स्वर्ग से निकट और नरक से दूर करती है,उसे तुम्हारे समक्ष स्पष्ट कर दिया गया)।[2]

अबूज़र रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैःहमें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस स्थिति में छोड़ा कि कोई पक्षी भी अपने पर मारता है तो हमारे पास इसका ज्ञान होता है।[3]

8.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि मानव स्वभाव से मिलता जुलता है जिस में कोई परिवर्तन नहीं आती,और साथ ही वह आत्मा एवं शरीर की आवश्यक्ताओं को भी पूरा करती है,अल्लाह का कथन हैः

(فأقم وجهك للدين حنيفا **فطرة** الله التي فطر الناس عليها لا تبديل لخلق الله ذلك الدين **القيم** ولكن أكثر الناس لا يعلمون)

अर्थातःतो (हे नबी!)आप सीधी रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस पर बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को,यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

---

[2]इसे तबरानी ने"المعجم الكبير"(1647)में अबूज़र रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है,अल्बानी ने " السلسلة الصحيحة "(1803)में कहाःइसकी सनद सही और इसके समस्त वर्नणकर्ता विश्वसनीय हैं।

[3]इसे इब्ने ह़िब्बान ने अपनी" صحيح "(267/1)में और तबरानी ने " المعجم الكبير " (1647)में वर्णित किया है और अल्बानी ने "المعجم الكبير "(118)में और शोऐब अलअरनाउूत ने इसे सही कहा है,रहिमहुमुल्लाह।

9.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह स्वस्थ दिमाग से मेल खाता है,यह कोई आश्चर्य की बात भी नहीं,(क्योंकि इस्लाम का आधार सही़ व लाभदायक आस्था,आत्मा और बुद्धि को उज्जवल कर देने वाले सुन्दर व्यवहार,स्थिति को सुधारने वाले कार्य,बहुमूल्य एवं आंशिक मामलों में प्रमाणों पर आधारित,मूर्तियों से दूर रहने,मख्लूक़ चाहे पुरूष हों अथवा महिला,उनसे दूर रहने,धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करने और उन अंधविश्वासों व निराधार बातों से दूर रहने पर है जो चेतना एवं बुद्धि के विरुद्ध और विचारधारा को आश्चर्य करने वाली हैं,इस्लाम धर्म का आधार पूर्णतया शुचिता,प्रत्येक प्रकार की बुराई को दूर करने,न्याय करने,और हर स्ंभव रूप से क्रूरता को दूर करने और संपूर्णता के भिन्न प्रकारों तक पहुंचने पर प्रोत्साहित करने पर है)।[4]

(अल्लाह और उसके रसूलों की बातों में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो चेतना,वास्तव स्थिति और सही बुद्धि के विरुद्ध हो,और न ही अल्लाह व रसूल के आदेश में कोई ऐसी चीज़ है जो नीति और बंदों के हित के विरुद्ध हो,बल्कि यही आदेश अपने अनुयायियों को पूर्णता के सर्वोच्च श्रेणी तक पहुचाते हैं और कमी एवं हानि का सामना इस स्थिति में करना पड़ता है कि जब उनकी या उनमें से कुछ के पालन में कमी की जाती है)।[5]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

---

[4] यह इब्ने सईद रहीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्हों न(الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي)पृष्ठ44–45में उल्लेख किया है,थोड़े हेर फेर के साथ,प्रकाशकः دار العاصمة –रियाज़

[5] यह इब्ने सादी रहीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्होंने(الدلائل القرآنية في أن العلوم والأعمال النافعة العصرية داخلة في الدين الإسلامي) में उल्लेख किया है,थोड़े हेर फेर के साथ।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

10.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह ब्रम्हांड में बुद्धि व चेतना के प्रयोग पर उकसाती है,अविश्कार पर उभारती है और ब्रम्हांड व जीवों में मोजूद चिन्हों पर विचार करने की ओर बोलाती है,अल्लाह का कथन है:

(سنريهم آياتنا في **الآفاق** وفي **أنفسهم** حتى يتبين لهم أنه الحق)

अर्थातःहम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाफॅ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर।यहॉ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः (وفي **أنفسكم** أفلا تبصرون)

अर्थातः तथा स्वयं तुम्हारे भीतर(भी)।फिर क्या तुम देखते नहीं?

ज्ञात हुआ कि इस्लामी शरीअ़त बुद्धि से मैल खाती है,टकराती नहीं है,वह ऐसे तथ्यों को प्रस्तुत करती है जिनके सामने बुद्धि आश्चर्यचकित अवश्य होती है,किन्तु उन्हें असंभव नहीं समझती,इस्लामी दुनिया संघ के अंतर्गत संचालित संस्था هيئة الإعجاز العلمي (वैज्ञानिक चमत्कार प्राधिकरण)ने कुरान व सुन्नत से निकले एजाज़(चमत्कार)के अनेक प्रमाण जमा कर दिए,चाहे यह भ्रूणविज्ञान से संबंधित एजाज़ हो अथवा खगोल से,अथवा चिकित्सा विज्ञान से हो या समुद्रि विज्ञान आदि से।एजाज़(चमत्कार)के इन प्रमाणों के सामने गैर मुस्लिम प्राकृतिक वैज्ञानिक गण आश्चर्यचकित रह गए,क्योंकि आज से चौदह सो वर्ष पूर्व क़ुरान व सुन्नत में इन अविष्कारों एवं अनवेषणों का उल्लेख असंभव है,हां यह कि वह अल्लाह की ओर से भेजी गइ **वह्य** हो,इस लिए कि उस युग में इन अविष्कारों के **स्रोत** लुप्त थे।यह ऐसी चीज है जिसके कारण अनेक प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने इस्लाम को स्वीकार किया।

इस्लामी शरीअ़त की ये कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिकों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तअ़ाला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य।**
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत मं भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखकः
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः
फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी